खसम एक सबन का, नाहीं न दूसरा कोए।
ए विचार तो करे, जो आप सांचे होए।। २० ।।

धनी सबका एक है। दूसरा तो कोई है नहीं। ऐसा विचार तो वही कर सकता है जो स्वयं सच्चा हो।

खेलें सब बेसुध में, कोई बोल काढ़े विसाल।
उतपन सारी मोह की, सो होए जाए पंपाल।। २१ ।।

यह सब बेसुधी में खेल खेलते बड़े-बड़े वचन बोलते हैं, जबकि सारी सृष्टि मोह से पैदा हुई है और मिट जाने वाली है।

बिना दिवालें लिखिए, अनेक चित्रामन।
सो क्यों पावे खुद को, जाको मूल मोह सुंन।। २२ ।।

इस तरह यहां पर बिना दीवाल के अनेक तरह के चित्र बना रहे हैं। ऐसे लोग संसार के हैं जिनका मूल ही शून्य निराकार है, वह परब्रह्म को कैसे पा सकते हैं?

अनेक किव इत उपजे, वैराट सचराचर।
ए छल मोहोरे छल को, खेलत हैं सत कर।। २३ ।।

यहां पर अनेक प्रकार के कवि पैदा हुए जिन्होंने संसार को कभी चल, कभी अचल कहा है। ये सब छल के मोहरे हैं और इसी छल को सत्य मानकर खेलते हैं।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ३६८ ।।

वैराट का कोहेड़ा

वैराट का फेर उलटा, मूल है आकास।
डारें पसरी पाताल में, यों कहे वेद प्रकास।। १ ।।

इस वैराट का फेरा उलटा है। इसका मूल आकाश में है और डालें पाताल में हैं। इस प्रकार वेदों का ज्ञान कहता है।

फल डारें अगोचर, आड़ी अंतराए पाताल।
वैराट वेद दोऊ कोहेड़ा, गूंथी सो छल की जाल।। २ ।।

इसकी फल और डालियां दिखाई नहीं देतीं। नीचे पाताल में छिप गई हैं। वैराट और वेद दोनों धुन्ध हैं जिन्होंने अलग-अलग अपनी जाली गूंथ रखी है।

विध दोऊ देखिए, एक नाभ दूजा मुख।
गूंथी जालें दोऊ जुगतें, मान लिए दुख सुख।। ३ ।।

दोनों की हकीकत देखिए तो वैराट की उत्पत्ति नाभि से हुई है और वेद की उत्पत्ति मुख से है। इन दोनों की युक्ति से जाली गुंथी है जिसमें सभी दुःख-सुख अनुभव करते हैं।

कोहेड़े दोऊ दो भांत के, एक वैराट दूजा वेद।
जीव जालों जाली बांधे, कोई जाने न छल भेद।। ४ ।।

एक वैराट और वेद की दो तरह की धुन्ध जाली में ही जीव बंधे हैं। पर इस छल को कोई जानता नहीं।

Nijanand App

देखलावने तुमको, कोहेड़े किए ए।
बताए देऊं आंकड़ी, छल बल की है जेह।।५।।

मोमिनों को खेल दिखाने के वास्ते ही इन दोनों कोहेड़े (धुन्ध) को बनाया है। इनकी आंकड़ी (हकीकत) को मैं बता देती हूं कि यह दोनों माया के छल और शक्ति की रचना हैं।

आंकड़ी एक इन भांत की, बांधी जोर सों ले।
आतम झूठी देखहीं, सांची देखें देह।।६।।

एक आंकड़ी बड़ी जोर से बांधी है जिससे आत्मा झूठी दिखती है और तन सच्चा दिखता है।

करें सगाई देह सों, नहीं आतमसों पेहेचान।
सनमंध पालें इनसों, ए लई सबों मान।।७।।

सारा संसार तन से रिश्ता करता है और आत्मा की पहचान होती ही नहीं। सारे सम्बन्ध इसी तन से ही पलते हैं, ऐसी जगत की रीति है।

नहवाए चरचे अरगजे, प्रीतें जिमावें पाक।
सनेह करके सेवहीं, पर नजर बांधी खाक।।८।।

इसी तन को नहलाते हैं, सुन्दर सुगन्धित तेल लगाते हैं, बड़े प्रेम से भोजन कराते हैं, प्रेम से सेवा करते हैं, पर यह खाक है। इससे रिश्ता गांठकर आशा लगाए बैठे हैं।

जीव गया जब अंग थें, तब अंग हाथों जालें।
सेवा जो करते सनेह सों, सो सनमंध ऐसा पालें।।९।।

इसी तन से जीव जब निकल जाता है तो अपने ही हाथों से उसी तन को जला देते हैं। जो बड़े प्यार से सेवा करते थे वह इस तरह का रिश्ता निभाते हैं।

हाथ पाऊं मुख नेत्र नासिका, सब सोई अंग के अंग।
तिन छूत लगाई घर को, प्यार था जिन संग।।१०।।

हाथ, पैर, मुख, नेत्र, नासिका, आदि सब अंग वही के वही रहते हैं। इनसे आज तक बड़ा प्यार था, परन्तु जीव निकल जाने के बाद वही तन अछूत हो जाता है।

अंग सारे प्यारे लगते, खिन एक रह्यो न जाए।
चेतन चले पीछे सो अंग, उठ उठ खाने धाए।।११।।

जो तन के अंग बड़े प्यारे लगते थे तथा जिनके बिना एक पल नहीं रहा जाता था, जीव निकल जाने के बाद वही दुश्मन लगते हैं। ऐसा लगता है कि हमें खा जाएंगे।

सनमंधी जब चल गया, अंग वैर उपज्या ताए।
सो तबहीं जलाए के, लियो सो घर बटाए।।१२।।

जब जीव चला जाता है तो उसी तन से दुश्मनी हो जाती है। फिर उसे घर से निकाल कर जला देते हैं। बाद में घर सम्पत्ति को हिस्सों में बांट लेते हैं।

छोड़ सगाई आतम की, करें सगाई आकार।
वैराट कोहेड़ा या बिध, उलटा सो कई प्रकार।।१३।।

आत्मा को छोड़कर तन से रिश्ता करते हैं, इस तरह का कोहेड़ा (धुन्ध) कई तरह से उलटा है।

Nijanand App

कई बिध यों उलटा, वैराट नेत्रों अंध।
चेतन बिना कहे छूत लागे, फेर तासों करे सनमंध।। १४ ।।

वैराट आंखों से अन्धा होने के कारण कई तरह से उलटा है। जब चेतन नहीं हो, तो कहते हैं कि छूत लग गई और चेतन होने पर उसी से सम्बन्ध करते हैं।

एक भेख जो विप्र का, दूजा भेख चंडाल।
जाके छुए छूत लागे, ताके संग कौन हवाल।। १५ ।।

एक तन ब्राह्मण का है। दूसरा तन चाण्डाल का है जिसे छूने से छूत मानते हैं और उसके साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

चंडाल हिरदे निरमल, खेले संग भगवान।
देखलावे नहीं काहू को, गोप राखे नाम।। १६ ।।

यदि चाण्डाल का हृदय निर्मल हो तो उस तन के साथ भगवान सदा खेलता है। वह किसी प्रकार का दिखावा नहीं करता है और छिपकर रिझाता है।

अंतराए नहीं खिन की, सनेह सांचे रंग।
अहनिस दृष्ट आतम की, नहीं देहसों संग।। १७ ।।

चाण्डाल भगवान से एक क्षण का अन्तर नहीं करता और भगवान के प्रेम में मगन रहता है। उसकी आत्मदृष्टि सदा भगवान की तरफ रहती है। तन से उसका कोई मतलब नहीं होता।

विप्र भेख बाहेर दृष्टी, खट कर्म पाले वेद।
स्याम खिन सुपने नहीं, जाने नहीं ब्रह्म भेद।। १८ ।।

ब्राह्मण का तन बाहर की दृष्टि से षट कर्मों को पालने वाला होता है। उसकी विचारधारा में श्यामजी कभी सपने में भी नहीं हैं और न उसको परमात्मा के रहस्य का पता है।

उदर कुटम कारने, उत्तमाई देखावे अंग।
व्याकरण वाद विवाद के, अर्थ करें कई रंग।। १९ ।।

वह अपने परिवार का पेट भरने के लिए ही शरीर की स्वच्छता और उत्तमता दिखाता है और व्याकरण के वाद-विवाद में कई अर्थ करता है।

अब कहो काके छुए, अंग लागे छोत।
अधम तम विप्र अंगे, चंडाल अंग उद्दोत।। २० ।।

अब महामतिजी पूछते हैं कि बताओ, इन दोनों में से किसके तन को छूने से छूत लगनी चाहिए। ब्राह्मण का तन अन्धकार से भरा तुच्छ है और चाण्डाल का तन भगवान के अन्दर होने से पाक और साफ है।

पेहेचान सबों को देह की, आतम की नहीं दृष्ट।
वैराट का फेर उलटा, इन बिध सारी सृष्ट।। २१ ।।

संसार के सभी लोग तन को देखते हैं। आत्मा की तरफ नजर ही नहीं होती। इस तरह से सारे वैराट का मामला उलटा है।

Nijanand App

एक देखो ए अचंभा, चाल चले संसार।
जाहेर है ए उलटा, जो देखिए कर विचार।। २२ ।।

एक और आश्चर्य (हैरानी) की बात देखो जिसमें संसार चलता है। यदि दिल में विचार करके देखें तो यह जाहिरी में भी उलटा है।

सांचे को झूठा कहें, और झूठे को कहें सांच।
सो भी देखाऊं जाहेर, सब रहे झूठे रांच।। २३ ।।

यह सत् आत्मा को झूठा कहते हैं और झूठे शरीर को सत् माने बैठे हैं। संसार के सभी लोग झूठे शरीर में ही लिप्त हैं। इस बात को और जाहिर करके बताती हूं।

आकार को निराकार कहें, निराकार को आकार।
आप फिरे सब देखें फिरते, असत यों निरधार।। २४ ।।

यह शरीर जो मिट जाने वाला है उसे आकार कहते हैं और आत्मा जो अखण्ड है (अजर-अमर है) उसे निराकार कहते हैं। सारे जगत के जीव इसी चक्कर में घूम फिर रहे हैं। इस तरह से यह झूठा है।

मूल बिना वैराट खड़ा, यों कहे सब संसार।
तो ख्वाब के जो दम आपे, ताए क्यों कहिए आकार।। २५ ।।

सभी संसार के लोग कहते हैं कि यह वृक्ष रूपी ब्रह्माण्ड बिना जड़ (आधार) के खड़ा है। तो इस सपने के ब्रह्माण्ड के जो जीव हैं उन्हें आकार वाला कैसे कहा जाए?

आकार न कहिए तिनको, काल को जो ग्रास।
काल सो निराकार है, आकार सदा अविनास।। २६ ।।

जो जन्मता और मरता है उसे आकार वाला नहीं कहना चाहिए। मरने वाले (शरीर को) निराकार और सदा रहने वाले (आत्मा) को आकार (साकार) कहना ही ठीक है (उचित है)।

जिन राचो मृग जल दृष्टे, जाको नाम प्रपंच।
ए छल मायाऐं किया, ऐसे रचे उलटे संच।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इस तरह से मृग-जल के प्रपंच (जाल) में मत फंसो। यह पूरा संसार उलटा है और संशय से भरा है।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ३९५ ।।

वेद का कोहेड़ा

अब कहूं कोहेड़ा वेद का, जाकी मिहीं गूंथी जाल।
याकी भी नेक केहेके, देऊं सो आंकड़ी टाल।। १ ।।

वेद के कोहेड़े की जाली बड़ी बारीक गुंथी है। इसकी थोड़ी-सी हकीकत कहकर संशय मिटा देती हूं।

वैराट आकार ख्वाब का, ब्रह्मा सो तिनकी बुध।
मन नारद फिरे दसों दिसा, वेदें बांध किए बेसुध।। २ ।।

ब्रह्माण्ड का आकार सपने का है इसमें बुद्धि के मालिक ब्रह्माजी हैं। मन के मालिक नारदजी हैं। यह दसों दिशाओं में घूमते हैं। इस तरह से वेदों ने सबको बांधकर बेसुध कर रखा है।

Nijanand App